International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 1, Jan.-Feb., 2024, Impact Factor: 8.376

ब्यवसायिक चयन में विद्यार्थियों के लिंग तथा विषयों के संबंध का अध्ययन

कुमारी मेधा[1], डॉ आशावती वर्मा[2]

[1]शोधार्थी. कैपिटल विश्वविद्यालय. कोडरमा
[2]सहायक प्रध्यापक. कैपिटल विश्वविद्यालय. कोडरमा

सार– संक्षेप

साक्षरता और शैक्षणिक कार्यान्वयन किसी भी देश के विकास के महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक हैं। शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है और लिंग, जाति, वर्ग, रंग और पंथ से परे होनी चाहिए और यह आर्थिक विकास और सतत विकास को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण कारकों में से एक है।युवा लोग रचनात्मकता, ऊर्जा और पहल, गतिशीलता और सामाजिक नवीनीकरण का स्रोत हैं। वे जल्दी सीखते हैं और आसानी से अनुकूलन करते हैं। स्कूल जाने और काम खोजने का मौका मिलने पर, वे आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति में भारी योगदान देंगे। आज 1–2 अरब से अधिक किशोर वयस्क हो रहे हैं। उनकी सफलता और खुशी समर्थन, रोल मॉडल, शिक्षा, कौशल, अवसरों और उन संसाधनों तक उनकी पहुंच पर निर्भर करती है जो उन्हें जिम्मेदार और स्वस्थ विकल्प बनाने के लिए सशक्त बना सकते हैं।प्रस्तुत अनुसंधान मेंमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों की मानसिकता की जानकारी प्राप्त होगी तो सम्मान एवं व्यावसायिक विषयों के चयन उत्तरदायित्व होगा।अन्वेष्णात्मक क्षेत्र को न्युनतमस्थान (14) प्राप्त है जो 3.5% है जो चिंता का विषय है।अन्वेशनात्मक क्षेत्र की रूचि विज्ञान के विधार्थीयो में है परंतु निम्नतम स्तर (09) यह दर्शाता है कि हजारीबाग जिले के आदीवासी विधार्थीयों में विज्ञान विषय लेने के उपरांत भी शोध के प्रति कम लगाव है। वाणिज्य लेने के उपरांत भी बच्चों की रूचि सामाजिक कला व यर्थाथवादी क्षेत्र में है अर्थात विषय चयन और रूचि में सामंजस्य की कमी है।

मुख्य शब्द–विषय चयन, व्यावसायिक विषय, अन्वेशनात्मक

परिचय

''शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं'' – नेल्सनमंडेला। साक्षरता और शैक्षणिक कार्यान्वयन किसी भी देश के विकास के महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक हैं। शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है और लिंग, जाति, वर्ग, रंग और पंथ से परे होनी चाहिए (मोहपात्रा जे.,2020) और यह आर्थिक विकास और सतत विकास को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। आजादी के शुरुआती दिनों से ही भारत हमेशा अपने देश में साक्षरता दर को बढ़ाने पर ध्यान देता रहा है। आज भी सरकार भारत में प्राथमिक और उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम चलाती है। किसी भी विकासात्मक रणनीति में मानव संसाधन विकास को अनिवार्य रूप से एक महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी जानी चाहिए, खासकर बड़ी आबादी वाले देश में। भारत सरकार का – ष्टिकोण यह सुनिश्चित करना है कि भारत में शिक्षा उच्चतम गुणवत्ता और बिना किसी भेदभाव के पूरी आबादी के लिए उपलब्ध।

झारखंड राज्य भारत के पूर्वी भाग में स्थित है और इसकी सुंदरता में विविध जंगल और आदिवासी संस्कृति शामिल है। झारखंड नाम संस्कृत शब्द 'झारीखंड' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'घना जंगल'। यह लौह अयस्क, कोयला, तांबा, यूरेनियम, अभ्रक, ग्रेफाइट और चूना पत्थर जैसे खनिजों का एक प्रमुख उत्पादक है। इस

राज्य की जनजातियाँ हजारों वर्षों से यहाँ रह रही हैं और पिछले कुछ दशकों को छोड़कर पिछले कुछ वर्षों में उनकी जीवनशैली और संस्कृति में कोई खास बदलाव नहीं आया है। कई शोधकर्ता अब मानते हैं कि झारखंड राज्य में जनजातियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा हड़प्पा के लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा के समान है। झारखंड में 32 आदिवासी समूह हैं। झारखंड राज्य की अनुसूचित जनजाति (एसटी) जनसंख्याय 2001 जनगणना के अनुसार 7,08,98 राज्य की कुल जनसंख्या (26,945,829) का 26–3 प्रतिशत है (झारखंड की आधिकारिक वेबसाइट)। आदिवासियों की प्रमुख आबादी वन और भूमि के मुख्य संरक्षक हैं। अब, झारखंड की साक्षरता दर 66-41ः थी (भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार)। 2011 में, राज्य ने 'बच्चों के निःशुल्क और अनिवार्य अधिकार' को अपनाया।

शिक्षा अधिनियम कहता है 14 वर्ष की आयु तक के बच्चों में शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए। सभी स्कूल आईसीएसई या भारतीय माध्यमिक शिक्षा प्रमाणपत्र, सीबीएसई या केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, या झारखंड राज्य बोर्ड से संबद्ध हैं (के. गौतम 2022)। एमएचआरडी सर्वेक्षण रिपोर्ट 2011 के अनुसार झारखंड में लड़कों और लड़कियों के लिए वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा के छात्रों की सकल नामांकन दर क्रमशः 47–75% और 48–98% है। कुल 48–32% बच्चे विभिन्न बोर्डों में वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा में नामांकित हैं। झारखंड सरकार के स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग की प्रतिबद्धता प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में केंद्र सरकार के दृष्टिकोण और मिशन को लागू करना है।"युवा लोग रचनात्मकता, ऊर्जा और पहल, गतिशीलता और सामाजिक नवीनीकरण का स्रोत हैं। वे जल्दी सीखते हैं और आसानी से अनुकूलन करते हैं। स्कूल जाने और काम खोजने का मौका मिलने पर, वे आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति में भारी योगदान देंगे। आज 1–2 अरब से अधिक किशोर वयस्क हो रहे हैं। उनकी सफलता और खुशी समर्थन, रोल मॉडल, शिक्षा, कौशल, अवसरों और उन संसाधनों तक उनकी पहुंच पर निर्भर करती है जो उन्हें जिम्मेदार और स्वस्थ विकल्प बनाने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

दुनिया की सबसे बड़ी पीढ़ी के युवाओं की भलाई में निवेश करने और भागीदारी सुनिश्चित करने से उनके जीवन में तुरंत सुधार होगा और आने वाली पीढ़ियों और समाज को लाभ मिलेगा। इस प्रकार, किशोर बहुत उत्पादक हो सकते हैं किशोरावस्था पर शोध के लिए सोसायटी आधिकारिक तौर पर ''जीवन के दूसरे दशक पर शोध के लिए समर्पित है।'' इस भावना में, इसकी प्रमुख पत्रिका ने पिछले दस वर्षों में महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किए हैं, जिसमें सामूहिक रूप से, जीवन की अद्वितीय अवस्था के रूप में किशोरावस्था की उन्नत वैज्ञानिक समझ है। इस काम के प्रभाव को कम किए बिना, हम तर्क देते हैं कि बड़े जीवन पाठ्यक्रम के भीतर किशोरावस्था की भूमिका को स्पष्ट करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, किशोरावस्था को अपने आप में एक विकासात्मक अवधि के रूप में समझने का हमारा प्राथमिक लक्ष्य एक पूरक लक्ष्य के साथ आना चाहिए। किशोरावस्था और इसकी विकासात्मक प्रक्रियाओं और अन्य जीवन अवधियों के बारे में अंतर्दृष्टि से जुड़ना। ये दोहरे लक्ष्य किशोरावस्था के साथ–साथ आम तौर पर जीवन के पाठ्यक्रम की प्रत्येक घंटे की समझ को पूरा करते हैं। आखरिकार, किशोरावस्था की सार्थकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बचपन के अनुभवों को बाद की दक्षताओं और स्थितियों में परिवर्तित करने और फिर, वयस्कता में संक्रमण स्थापित करने की इसकी शक्ति में निहित है (स्टाइनबर्ग और मॉरिस, 2000)।

सामाजिक प्रगति, लोकतंत्र और सद्भाव के बीच एक संबंध है(सिंह एम., पांडे एस. और कुमारी ए., 2022)। एनईपी 2020 एक नीति दस्तावेज है जिसमें बहुमुखी प्रतिभा है और व्यावसायिक शिक्षा के बदलाव पर व्यापक रूप से चर्चा की गई है (शुभांगी रमन, 2020)। भारत में नई शिक्षा प्रणाली के निर्माण के लिए इस नीति के पांच निर्माण खंडों, अर्थात् पहुंच, समानता, सामर्थ्य, जवाबदेही और गुणवत्ता पर विचार किया गया है ताकि सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र (यूएन) 2030 के एजेंडे के सिद्धांतों के साथ एक पूर्ण सामंजस्य बनाया जा सके (कुमार के., प्रकाश, ए. एवं सिंह के. 2020)। एनईपी 2020 व्यावसायिक शिक्षा को नए और अधिक कुशल तरीके से पेश करने की पूरी कोशिश कर रहा है ताकि यह आर्थिक विकास, रोजगार और आत्म–निर्भरता बढ़ाने में मदद कर सके और भारत में बढ़ती जनसंख्या के बाद भी शांति और सद्भाव बनाए रखने में मदद कर सके (सिंह एम., पांडे एस. और कुमारी ए., 2022)।हम जानते हैं कि कौशल विकास आर्थिक उत्पादकता और सामाजिक कल्याण (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन। 2006) से जुड़ा हुआ है। उम्मीद है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 नए भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाएगी। राजनीतिक रूप से पिछड़ी स्थिति. वे सामाजिक परिवर्तन और सतत विकास के बारे में जागरूक नहीं हैं। जनजातीय आबादी पारंपरिक रूप से वन मोजेक परिदृश्य में या उसके आसपास अपना निवास स्थान रखती है और जनजातीय समुदाय और उनके आसपास के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के बीच एक सहजीवी संबंध रहा है। झारखंड की भौगोलिक और जलवायु स्थिति कृषि का समर्थन करती है।शिक्षा प्रणाली जलवायु परिस्थितियों और भौगोलिक दृष्टि से ठीक से तैयार नहीं की गई है, इसलिए लोग शैक्षिक उद्देश्यों या रोजगार के लिए लगातार दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं।

शोध का प्रा़रूप

प्रस्तुत अनुसंधान में जनसंख्या या समग्र से तात्पर्य उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों से है तथा उनके व्यवसायिक रूचि के चुनाव में उसपर पड़ने वाले प्रभावों के आंकलन का अध्ययन करने से है। प्रस्तुत शोधकार्य में हजारीबाग शहर में स्थित उच्च माध्यमिक विद्याालयों (सरकारी एवं निजी) की कक्षाओं में अध्ययनकर्ता ने कक्षा 10वीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया है।सर्वप्रथम हजारीबाग जिले के विद्यालयों की सूचि प्राप्त की गई जिनमें उच्च माध्यमिक स्तर की पढ़ाई संचालित है।विद्यालयों की सूचि प्राप्त करने के पश्चात् उनमें अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की पहचान की गई।पूरी प्रक्रिया में यादृश्यिक न्यायदर्श विधि का प्रयोग किया गया।चयनीत विद्यार्थियों एवं विद्यालयों के प्राचार्य से अनुमति प्राप्त करने के उपरांत उपकरण प्रशासित किये गये।कुल 400 प्रतिदर्श का चयन इस कार्य के लिए किया गया। जिसमें 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को सम्मिलित किया गया। यह शोध हजारीबाग जिले के विद्यार्थियों के व्यवसायिक चुनाव से संबंधित है। अतः वर्णात्मक विधि तथा यादृच्छिक प्रतिदर्श को इन शोध में विधि के चयन के रूप में अपनाया गया।

तालिका–1: प्रतिदर्श का विवरण लिंग एवं विद्यालय के प्रकार के आधार पर

क्रम संख्या	प्रमुख चर	उप चर	कला	विज्ञान	वाणिज्य	कुल संख्या
1.	लिंग	महिला	26	112	62	200
		पुरूष	103	69	28	200
2.	विद्यालय के प्रकार	निजी	96	136	68	300
		सरकारी	33	45	22	100

तालिका– 2: विधार्थीयों के विभिन्न व्यवसायीक रूचियों के आंकड़े का विवरण

लिंग आधारित विद्यार्थी	व्यवसायीक रूची						
	यर्थाथवादी	अन्वेष्णात्मक	कलात्मक	सामाजिक	उद्यमी	पारंम्परिक	कुल
छात्रों को संख्या	26	08	64	52	36	14	200
छात्राओं की संख्या	30	6	55	46	47	16	200
कुल	56	14	119	98	83	30	400

चित्र 1–विधाथीर्यों के विभिन्न व्यवसायीक रूचियों के आंकड़े का विवरण

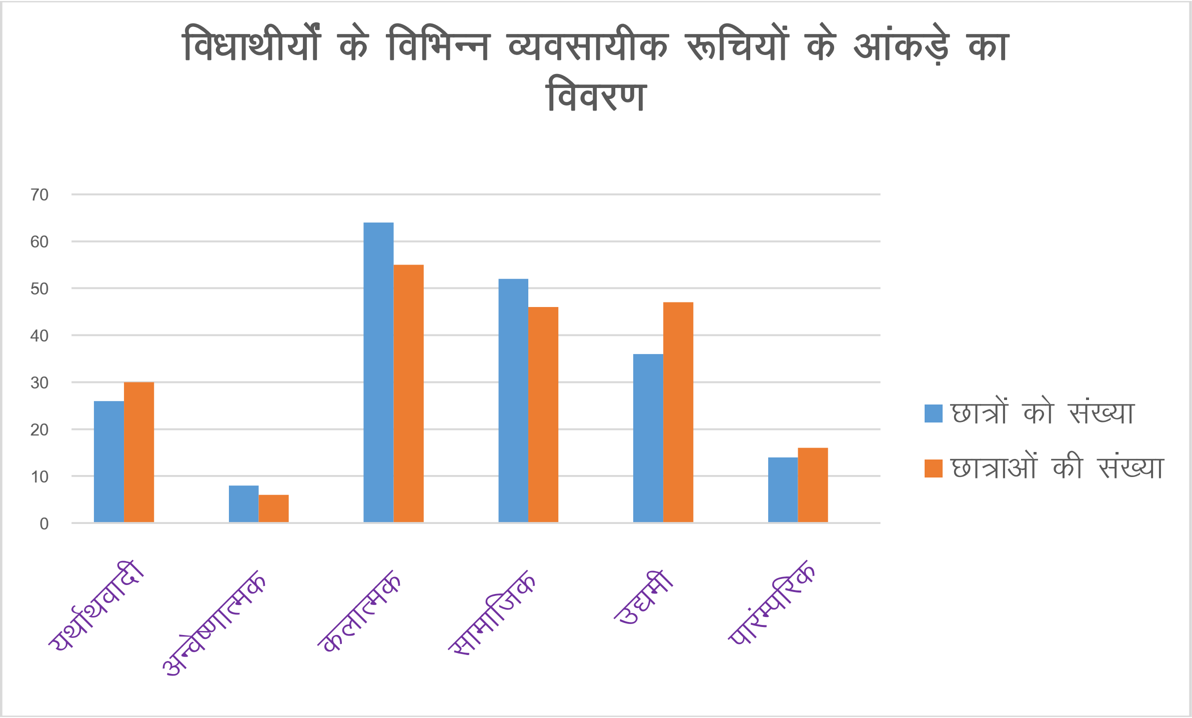

तलिका विवरण –

- उपरोक्त आंकडों के आधार परव्यवसायिक रूचि संबधी आंकड़ो के विवरण में हम पाते हैं कि कलात्मक व्यवसाय के प्रति बच्चों में ज्यादा रूझान (संख्या 119) प्रतीत होता है जो संपूर्ण आंकडे का 29.75% है। पुनः आंकडे दर्शाते हैं कि छात्रों को संख्या (64)तथा छात्राओं की संख्या (55) में ज्यादा अंतर नहीं है।
- तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि द्वितीय तथा त्रीतीय स्थान क्रमशः सामाजिक (98) तथा उद्यमी (83) को प्राप्त है। ऐसे व्यक्ति लोगों से मेलजोल रखना उनके संपर्क में रहकर उन्हें अपने सांचे से अवगत

कराने वाले होते हैं। ये वाचाल तथा अपनी भाषा तथा संप्रेषण कौशल से लोगों को प्रभावित करने वाले होते हैं।

- अन्वेष्णात्मक क्षेत्र को न्युनतमस्थान (14) प्राप्त है जो 3.5% है । उपकरण में रूचियों की व्याख्या के अनुसार यह क्षेत्र खोज करने, शोध करने, अवलोकन करने, प्रयोग करने, प्रश्न पूछने तथा समाधान वाले होते हैं। इनके विचार विश्लेषणात्मक तथा तार्किक होते हैं।

तालिका–3: विषय चयन के आधार पर व्यवसायिक रूचि संबंधी आंकड़ों का विवरण

वैकल्पिक विषय	यर्थाथवादी	अन्वेष्णात्मक	कलात्मक	सामाजिक	उद्यमी	पारम्पारिक	कुल
विज्ञान	16	09	28	31	19	19	122
कला	30	00	78	50	21	07	186
वाणिज्य	10	05	13	17	43	04	92
कुल	56	14	119	98	83	30	400

fig-4 विषय चयन के आधार पर व्यवसायिक रूचि संबंधी आंकड़ों का विवरण

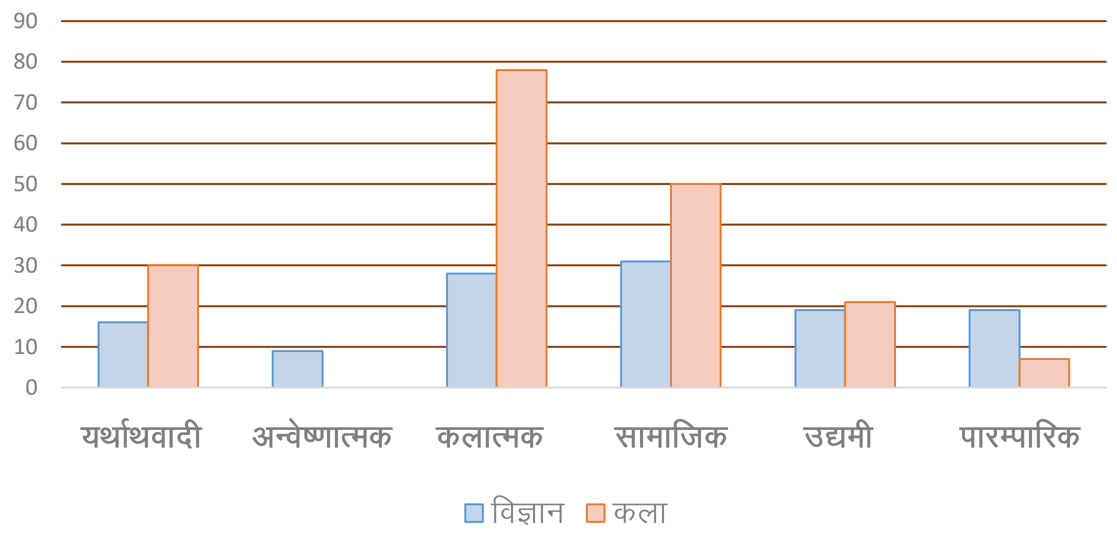

तालिका विवरण

- विषय चयन के आधार पर अगर हम व्यवसायिक रूचि संबंधी आंकड़ो को विवरण में पाते कि विज्ञान विषय में सामाजिक क्षेत्र में 31 बच्चे अपनी रूचि दिखा रहे है कलात्मक क्षेत्र में भी इनकी रूचि उच्च (28) स्तर पर देखी गई है। अन्वेशनात्यक क्षेत्र की रूचि विज्ञान के विधार्थीयो में है परंतु निम्नतम स्तर (09) यह

दर्शाता है कि हजारीबाग जिले के आदीवासी विधार्थीयों में विज्ञान विषय लेने के उपरांत भी शोध के प्रति कम लगाव है।

- कला के विधार्थी को सबसे ज्यादा रूचि कलात्मक क्षेत्र में है। 186 बच्चो में 78 बच्चे कलात्मक क्षेत्र को व्यवसाय रूप में चयन करने के लिये उत्सुक है। यह एक साकारात्मक सहसंबंध को दर्शाता है।
- कला के विधार्थी सामाजिक क्षेत्र में भी अपनी रूचि दिखा रहे है तथा यर्थाथवादी क्षेत्र में भी इनकी संख्या 30 के लगभग है अन्वेशनात्मक क्षेत्र में कला के विधार्थी की रूचि नगण्य है। उसी प्रकार उधमी क्षेत्र को अपने व्यवसाय में लेने वाले छात्रो की संख्या 21 है पारम्पारिक क्षेत्र में मात्र 07 बच्चे व्यवसायिक रूचि दिखा रहे है
- कांमर्स या वाणिाय विषय के विधार्थीयों में 43 बच्चे उधमी के रूप में व्यवसायिक रूचि दिखा रहे है 19 बच्चे कलात्मक क्षेत्रों में अपना भविष्य बनाने को चाहते है।
- वाणिज्य लेने के उपरांत भी बच्चों की रूचि सामाजिक कला व यर्थाथवादी क्षेत्र में है।

निष्कर्श–

वर्त्तमान समय में शिक्षा का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। शिक्षा न केवल समाज बल्कि संपूर्ण राष्ट्र की उन्नति का आघार है।प्रस्तुत शोध में इंटर कॉलेज एवं प्लस टू के विद्यार्थियों में रोजगार उन्मुखी शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन से दोनों संस्थानों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की मानसिकता की जानकारी प्राप्त होगी तो सम्मान एवं व्यावसायिक विषयों के चयन उत्तरदायित्व होगा।अन्वेष्णात्मक क्षेत्र को न्युनतमस्थान (14) प्राप्त है जो 3.5% है जो चिंता का विषय है।अन्वेशनात्यक क्षेत्र की रूचि विज्ञान के विधार्थीयो में है परंतु निम्नतम स्तर (09) यह दर्शाता है कि हजारीबाग जिले के आदीवासी विधार्थीयों में विज्ञान विषय लेने के उपरांत भी शोध के प्रति कम लगाव है। वाणिज्य लेने के उपरांत भी बच्चों की रूचि सामाजिक कला व यर्थाथवादी क्षेत्र में है अर्थात विषय चयन और रूचि में सामंजस्य की कमी है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. वर्मा, शरत एवं शर्मा, लालसा (2000) : ''उच्च माध्यमिक स्तर पर एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'', भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाई 2000, पृष्ट क्रमांक––54–58
2. ज्ञानानी, टी0सी0 एवं देवगन प्रवीन (2005) : ''माता–पिता द्वारा प्रदत प्रोत्साहन एवं पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि'', भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाई 2005, एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली, पृ0सं0– 60–65
3. कुमार, मनीष (2008) : ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन; जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एक्सप्लोरेशन इन टीचर एजुकेशन वाल्युम–I अप्रैल 2008, पृ0सं0– 59–65
4. गुप्ता, रश्मि एवं शर्मा, मनोरमा (2008) : ''माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत उच्च आय वर्ग और निम्न आय वर्ग वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'', रिसर्च लिंक–56, वाल्यूम VII(9) नवम्बर 2008, पृ0सं0–78–79
5. शैली (2008) : ''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों और पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एक्सप्लोरेशन इन टीचर एजुकेशन, वाल्यूम (1) अप्रैल 2008, पृ0सं0–49–54
6. पटेल, विशाखा, निगम भूपेन्द्र एवं अन्य (2009) : ''प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।